हरीश चंद्र पांडेय की तीन कविताएं

दृश्य

मेरी दोनों आंखें मिल कर देखने का एक अखंड घेरा बनाती हैं
इस घेरे भर की सड़क में कई आ जा रहे हैं

सड़क पर चलने के अपने नियम हैं   दायें   बायें
पर दृश्यों के देखे जाने के नहीं

एक रिक्शा है
जिसमें मिठाई के खाली डिब्बों का गट्ठर बंधा है

उसके ठीक पीछे दूसरे रिक्शे में एक आदमी
कच्चे बांस की सीढ़ी थामे बैठा है, सफेद गठरी के साथ

अब यह कोई क्रम हुआ चीजों को देखे जाने की अपेक्षाओं का
हमारे चाहने न चाहने के अनुसार नहीं गुजरते हैं दृश्य

वह एक साइकिल सवार चल रहा है पैदल को बचाते हुए
फिर एक ट्रक गुजर गया है
अचानक एक गाड़ी कूद सी गयी है इस बीच सायरन बजाते हुए
उसके पीछे गाड़ियों का काफिला है

अरब सागर से निकला सारा तेल मेरे सामने बहने लगा है

मुझे अब पैदल यात्री नहीं दिख रहा है
न ही साइकिल   न ही ट्रक
जबकि मेरी आंखों में देखने की अपेक्षाओं की एक सरणि है

मिठाई के डिब्बों वाला रिक्शा किस दुकान पर जाकर रुकेगा
बांस की सीढ़ी किस घाट पर जायेगी
तय नहीं है
पर सड़क के दोनों ओर लगी ये बल्लियां जायेंगी ठेकेदार के गोदाम में
और यह तेल की नदी ब रास्ते सर्किट हाउस और एयरोड्रोम के
आकाश में बहने लगेगी
यह तय है

जैसे यह तय है
कि कल सुबह सुबह मिट्टी के तेल के लिए फिर से लम्बी लाइनें लग जायेंगी
सस्ते गल्ले की दुकानों पर
और एक रेखा जो खींच दी गयी है उनकी सुरक्षा में उनके सिर के ऊपर
वे गरीब उसे उचक उचक कर
फिर से ढूंढ रहे होंगे

सेब और न्यूटन

फल पहले भी गिरा करते थे
आज भी गिरते हैं
कल भी गिरेंगे

पर वह सेब...

जिसका गिरना जगा गया न्यूटन को
गुरुत्व आकर्षण सिद्धांत का भागीदार रहा था जो

न्यूटन अमर हो गया
पर उस सेब का क्या हुआ होगा?

कौंध के बाद क्या वह खाया गया होगा न्यूटन द्वारा
बदन के कपड़ों से रगड़ पोंछ कर

या उठा के रख लिया गया होगा – संग्रहकर्ता सा
या वहीं पड़ा रहने दिया गया होगा – खाद बन जाने को

गुरुत्वाकर्षण की महान चकाचौंध के बीच जरा सोचो तो
उस सेब का क्या हुआ होगा

ईश्वर

वह क्या जानेगा मरणांतक कष्ट
जो कभी मरता ही नहीं

जो आदमी जानता है
ईश्वर नहीं

मरने के बाद क्या होता है
यह एक मृतक ही जाने

ईश्वर कभी नहीं जान सकता